काव्य हेतु

काव्य हेतु का सामान्य अर्थ है- कविता का कारण। कवि क्यों लिखता है, के साथ ही एक बहुत स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि कविता लिखी कैसे जाती है। स्पष्टत: काव्य का प्रयोजन जहाँ पाठक वर्ग से सम्बन्धित है, वहीं काव्य का हेतु सीधे कवि से जुड़ा हुआ सवाल है। संवेदनशीलता मात्र कवि की धरोहर नहीं होती है। बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें घटनाएँ झकझोरती हैं, ह्रदय उद्वेलित करते हैं, पर क्या अपने उस अनुभव को शब्द बद्ध करने की प्रतिभा भी उनमें होती? अनुभव का धरातल ही कविता के करण के लिए पर्याप्त नहीं होता है। यहीं पर हेतु का प्रश्न खड़ा हो जाता है।

आचार्य मम्मट ने 'शक्ति' निपुणता, और अभ्यास' इन तीनों को सम्मिलित रूप से काव्य का हेतु माना है-

"शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञ-शिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥"

अर्थात कवि में संस्कार रूप में विद्यमान शक्ति, लोकव्यवहार, शास्त्र तथा

प्रतिभा -

काव्य आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और काव्य मर्म को जानने वाले गुरु के शिक्षा के अनुसार काव्य निर्माण का अभ्यास ये तीनों ही समष्टि रूप से काव्य के हेतु है।

Scanned with CamScanner

काव्य हेतु के तत्व -

काव्यशास्त्रियों ने काव्य हेतु के तीन तत्व स्वीकार किया है।

1- प्रतिभा या शक्ति
2- व्युत्पत्ति
3. अभ्यास

1- प्रतिभा - प्रायः सभी विद्वानों ने प्रतिभा का आधार माना है। इस गंगाधर की टीका में मधुसूदन शास्त्री ने प्रतिभा को सर्वप्रमुख तथा स्वास्थ्य, अभ्यास, भक्ति, स्मृति, उत्साह, समाधि तथा व्युत्पत्ति को उसका उपकारक माना है। प्रतिभा के अंतर्गत नूतन तथा सर्जना की स्फूर्ति जाग्रत होती है। यह मनुष्य की जन्म ~~जाति~~ जात शक्ति है और इसलिए प्रतिभा को स्वयं-प्रकाश माना जाता है। प्रतिभा के संदर्भ में भट्टतौत ने लिखा है -

"प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।"

अर्थात प्रतिभा नवोन्मेष शालिनी होती है। कवि अपनी प्रतिभा से काव्य में प्रयुक्त उपमान को नित नवीन रूप प्रदान करता है।

ध्वन्यालोक में आनन्दवर्धन ने 'प्रतिभा' के लिए " अपूर्ववस्तु निर्माणक्षमा प्रज्ञा " का प्रयोग किया है। मम्मट 'प्रतिभा' शब्द के स्थान पर 'शक्ति' शब्द के प्रयोग पर बल देते हैं।

Scanned with CamScanner

आचार्य रुद्रट प्रतिभा के दो भेद मानते हैं- "सहजोत्पाद्या सा द्विधा भवति" अर्थात सहजा और उत्पाद्या। सहजा जहाँ ईश्वरीय शक्ति है, वहीं उत्पाद्या शास्त्र लोकानुभव तथा सत्संग से प्राप्त है।

राजशेखर ने प्रतिभा के दो प्रकार बताया है- कारयित्री व भावयित्री। कवि का उपकार करने वाली प्रतिभा कारयित्री कहलाती है। इसके तीन भेद होते हैं- 1- सहजा 2- आहार्या 3- औपदेशिकी। जन्मान्तर के संस्कारों की अपेक्षा रखने वाली सहजा होती है। वर्तमान जन्म के संस्कारों से उत्पन्न आहार्या। मंत्र-तंत्र आदि साधनों से उत्पन्न औपदेशिक होती है। भावक का उपकार करने वाली प्रतिभा भावयित्री कहलाती है। यह प्रतिभा कवि के श्रम तथा अभिप्राय का बोध कराती है।

२. व्युत्पत्ति -

आचार्य राजशेखर ने प्राचीन आचार्यों के मत का उल्लेख करते हुए व्युत्पत्ति का अर्थ 'बहुज्ञता' माना है। बहुज्ञता का आशय होता है कवि द्वारा अपनी भौतिक जगत से प्राप्त ज्ञान, चाहे वह किसी भी माध्यम से अर्जित किया गया हो। राजशेखर ने कहा कि "उचित अनुचित का विवेक व्युत्पत्ति है।" सभी आचार्यों ने व्युत्पत्ति को प्रतिभा का संस्कार माना है। राजशेखर ने " प्रतिभा और व्युत्पत्ति को

दोनों को समवेत रूप से श्रेयस्कर माना है। आचार्य वामन काव्य हेतु के लिए काव्यांग शब्द का प्रयोग किया है।

॥लोको विद्याप्रकीर्णश्च काव्यांगानि ॥

लोक का अर्थ यहाँ लोक व्यवहार से है। विद्या स्मृति, शब्दशास्त्र, अभिधान कोश, छन्दोविचिति, कलाशास्त्र, दण्डनीति, राजनीति, तथा इतिहास आदि विद्याओं से सम्बद्ध है। प्रकीर्ण को वामन छः प्रकारों में विभक्त करते हैं- लक्ष्य, तत्व, अभियोग, वृद्ध सेवा, अवेक्षण, प्रतिभान। लोक व शास्त्र सब व्युत्पत्ति में समाहित हो जाते हैं।

3- अभ्यास -

निरन्तर प्रयास करते रहते को अभ्यास कहते हैं। सभी आचार्यों ने अभ्यास को प्रतिभा का पोषक माना है। दण्डी ने प्रतिभा को सर्वोपरि स्वीकार करते हुए कहा कि ॥ पूर्व वासनाजन्य अद्‌भुत प्रतिभा के न रहने पर भी शास्त्र अध्ययन व अभ्यास से वाणी की उपासना करने पर वाणी अवश्य ही अनुग्रह करती है। दण्डी के अनुसार

॥अभेदाश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्य सम्पदः।॥

अर्थात जन्मजात प्रतिभा, निर्मल शास्त्र तथा बड़ा-चढ़ा अभ्यास काव्य सम्पत्ति का कारण है। प्रतिभा के अभाव में निम्नकोटि की रचना होती है। प्रतिभा अभ्यास से और निखरती है। दण्डी शास्त्र व अभ्यास के अभाव में कवित्व की संभावना से इंकार करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्र - डॉ० अर्चना श्रीवास्तव

2- काव्यशास्त्र - डॉ० भगीरथ मिश्र

3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा - डॉ०रामचन्द्र तिवारी

4- भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ० तिशा अग्रवा

5- हिन्दी साहित्य कोश - भाग-1 स० धीरेन्द्र वर्मा